मायूस न हों बाल मधुमेही

– दीपिका नवरे

प्रिय होनहार दोस्तों,

इसमें कोई शक नहीं है कि हमसे बढ़कर काबिले तारीफ इस दुनियाँ में कोई नहीं है। जिस प्रकार मधुमेह के साथ हम अपना जीवन हँसी–खुशी व्यतीत कर रहे हैं, भला इससे बढ़कर और कोई बात हो सकती है क्या?

'मधुमेह', जीवन की दौड़ में एक शब्द जो फर्क लाता है। हम कह सकते हैं कि हम दूसरों से अलग है। लेकिन ऐसा क्यों? अगर सोचें तो मन में बात आती हैं, वो हैं रोज़ के इन्जेक्शन, जैसे किसी ने सुबह, दोपहर, शाम करेले के जूस के साथ करेले के पराठे खाने को दिए हों।

पर अगर इस चीज को अलग तरह से लें तो? एक काम करते हैं कि मधुमेह को अपनी कमजोरी नहीं, अपनी शक्ति मानते हैं, और सच मानिए परिणाम जरूर पाजिटिव आएँगें।

क्या आप कभी किसी बहुत बड़े इन्सान से मिले हैं, जैसे भारत के राष्ट्रपति, कोई मंत्री अथवा कोई इंटरनेशनल स्तरीय क्रिकेटर? शायद हाँ, शायद ना? चलिए आपको एक बात बताती हूँ। आपने अब्दुल कलाम (भारत के राष्ट्रपति), सुषमा स्वराज (मंत्री), वसीम अकरम (पाकिस्तान के क्रिकेटर) के नाम जरूर सुने होंगे, लेकिन क्या जानते हैं कि ये सब मधुमेही हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि मधुमेही अपने भविष्य में कितने सफल इंसान बनते हैं। हो सकता है कि कल मेरा, आपका नाम भी कोई इतने ही गर्व के साथ पढ़ रहा हो। और यह संभव है, अगर हम अपने कार्य के बीच में इस मधुमेह को रुकावट न बनने दें तो? जम कर काम कीजिए और भूल जाईये कि काम करने से शुगर पर कुछ फर्क पड़ेगा। अपने आप को सामान्य समझें। पढ़कर कितना अच्छा लग रहा है ना, मुझे भी लिखते–लिखते ऐसा लग रहा है कि पृथ्वी की सारी शक्तियाँ मेरे अन्दर समा गई हैं, आईये इस भावना को साथ में महसूस करते हैं और दुनियाँ की सारी शक्तियाँ अपने में समा लेते हैं जिससे हमें कोई भी काम करने में जरा भी रुकावट न आए।

हम सभी जानते हैं कि हमारी कामयाबी पर जो सबसे ज्यादा खुश होते हैं वे हैं हमारे माता–पिता, और हमारी उदासी पर वे उदास। तो वादा करते हैं कि आज के बाद अपने माता–पिता को कभी निराश नहीं करेंगे।

आईये, स्वागत करते हैं कि इस नई दुनियाँ का, जिसकी नींव हमने, हम 'मधुमेही' ने बनाई है ताकि आगे जाकर लोग कह सकें 'The successful person with diabetes' हैं वहाँ। ● ● ●

आपकी दोस्त – दीपिका